सही समझ व सही प्रयत्न :

योगवासिष्ठ से लिए गए उद्धरण

२

सन्तोष परम लाभ है। सत्संग, गन्तव्य तक पहुँचने के मार्ग पर सर्वश्रेष्ठ साथी है। विचार [आत्म-विचार] स्वयं ही परम ज्ञान है और आत्मसंयम परम सुख है।

© २०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

योगवासिष्ठ; स्वामी वेंकटेशानन्द, *The Supreme Yoga: Yoga Vasishtha* [दिल्ली, भारत : मोतीलाल बनारसीदास, २०१०] पृ. ३०।